विचार बिन्दु

सच्चे वीर को युद्ध में मृत्यु से जितना कष्ट नहीं होता उससे कहीं अधिक कष्ट कायर को युद्ध के भय से होता है।

–भतृहरि

स्वास्थ्य का अधिकार एक भद्दा मज़ाक

'स्वास्थ्य का अधिकार' के लिये बड़े–बड़े विज्ञापन छप रहे हैं, होर्डिंग बन रहे हैं। ढोल बजा कर प्रचार–प्रसार हो रहा है, पीठ थपथपाई जा रही है। एक उक्ति याद आती है। दो मित्र मिले, एक गधा और एक कौआ। कौए को देखकर गधे ने कहा–'अहो रूपं, याने वाह कितना सुंदर स्वरूप है।' कौए ने गधे को कहा, 'अहो ध्वनि', याने कितनी सुंदर ध्वनि है। यही स्थिति राजनीतिक दलों की हो रही है। उनके सदस्य अपने ही दल के कार्यों की प्रशंसा करते है और वह भी झूठी। यही हाल राजस्थान की सरकार का है। एक विवादास्पद बिल लाकर 17 दिन तक हठधर्मिता दिखाई, हड़ताल रही, निजी चिकित्सालयों की और उनके समर्थन में सरकारी डॉक्टरों की भी, और जनता को घोर कष्ट देकर और कई को मौत के मुँह में धकेल कर अंततोगत्वा हार मानकर वह करना पड़ा जो 17 दिन पहले भी किया जा सकता था।

जनता का भी समर्थन चूँकि इस आंदोलन को मिलने लगा था अतः सरकार को झुकना पड़ा। छोटे क्लिनिकों के साथ अपने स्वयं के साधनों से चलने वाले हॉस्पिटल इस बिल से बाहर किये गये। 'एमरजेन्सी' को परिभाषित करने का आश्वासन दिया गया जो निश्चय ही सही माँग थी।

एक बात जनता को अब तक समझ में आ जानी चाहिये कि इस दुनिया में मुफ्त कुछ नहीं मिलता। हर चीज़ की कीमत चुकानी पड़ती है। ईश्वर ने पाँच तत्व मुफ्त दिये थे वे भी अब सरकारों की गलत रीति–नीति से खरीदना पड़ता है। कुएँ, बावड़ी, तालाब, झील, नदी का जल शुद्ध था। सभी इनसे मुफ्त पानी ले आते थे, अब नलों का व पानी की बोतल का पैसा चुकाना पड़ता है। ईंधन सुलभ था, जंगल था। गरीब लोग लकड़ी बीन लाते थे, कंडे जलाते और कुछ भी खर्चा न होता। वायु चारों ओर शुद्ध थी। आक्सीजन ही आक्सीजन थी, अब सरकारों के कारनामों से आक्सीजन सिलिंडर खरीदना पड़ती है। चारों ओर मिट्टी शुद्ध थी, शुद्ध अनाज देती थी और स्वच्छंद आकाश बिना ग्लोबल वार्मिंग के और सरकारों की उद्योग नीति के कारण असामयिक प्रकृति के कोप बहुत कम होते थे।

सरकार के कारनामों से पंचतत्व भी दुर्लभ हुए और अन्य समस्त वस्तुएँ भी मूल्यवान और फिर महँगी होती चली गई। सरकारों के वोट से चुने जाने पर सरकारों ने एक खतरनाक खेल शुरू किया। कुछ लोगों से खूब वसूली करो और कुछ को मुफ्त की रेवड़ी बाँटो। इस रीति–नीति से देशों का दिवाला निकलने लगा, श्रीलंका व कई अन्य देश इसके उदाहरण हैं।

स्वास्थ्य का अधिकार तो ईश्वर ने हमें दिया था। सरकारो ने तो यह अधिकार हमसे छीना है। ज़रा सोचिये यह अधिकार का ढोंग कितना अधिक है। स्वास्थ्य के अधिकार के पहले वे चीज़े शुद्ध होनी चाहिये जो अच्छा स्वास्थ्य देती हैं। इन चीज़ों के बिना स्वास्थ्य अच्छा रह ही नहीं सकता, वह बिगड़ेगा ही, फिर 'स्वास्थ्य का अधिकार' एक मज़ाक ही रहेगा ना। अच्छे स्वास्थ्य के लिये सबसे पहले पीने का पानी शुद्ध होना चाहिये। क्या हमारी सरकारें स्वतंत्रता के 75 वर्षों में पीने का शुद्ध पानी सारे देश को उपलब्ध करा पाई है? आज अधिकांश बीमारियाँ अशुद्ध पानी के कारण हो रही हैं और हमें बीमार पड़ना ही है। आपको याद होगा कहीं चोट लगती तो राख व मिट्टी लगा देते थे क्योंकि ये वस्तुए शुद्ध थीं। आज मिट्टी व उसका उत्पादित खाद्य पदार्थ जहरीला है। वह खाद्य व गुण अब रहे ही नहीं। यही नहीं सरकार की सबसे बड़ी विफलता मिलावटखोरी को न रोक पाने की है। सब्जी, फल, दूध, अन्न, दालें, मसाले, घी, तेल कौन सी वस्तु ऐसी है जो मिलावट के ज़हर से दूर है? ज़हरीले खाद्य पदार्थों से अनेक गंभीर बीमारियाँ केन्सर और हृदय रोग आदि होते हैं। बताइये स्वास्थ्य का अधिकार एक भद्दा मज़ाक है कि नहीं?

केवल कागज़ी आदेशों व कार्रवाई से हालात नहीं बदलते। जब सरकार अपनी नीतियों में नीयत साफ नहीं रखती तो अव्यवस्था बढ़ती है, घटती नहीं। राजस्थान के आगामी चुनावों के मद्देनज़र 'स्वास्थ्य का अधिकार' भी मात्र एक भद्दे मज़ाक से अधिक कुछ भी नहीं है और यह कटु सत्य आने वाला समय स्वतः ही जनता पर उजागर होगा।

देहली का समाचार तो हम सुनते ही रहते हैं। हमारे देश की राजधानी है वह। वहाँ साँस लेना भी मुश्किल हो गया है। यही हाल उदयपुर व अनेक नगरों व गाँवों का है। क्या साँस की, फेफड़ों की, हृदय की बीमारियाँ रुक सकती हैं? दरअसल सरकारों ने हमें बीमार होने का अधिकार दिया है। बीमार हो, इलाज कराइये यदि मिले तो, अन्यथा मरिये। क्या ज़हरीली शराब को सरकार रोक पाई है जिससे हजारों जानें प्रतिवर्ष जाती हैं।

सरकार का हाल तो यह है कि उलटे बाँस बरेली को यूँ कहें कि गाड़ी आगे और घोड़ा पीछे है। जो काम पहले होने चाहिये वे तो वे कर नहीं पा रहे और केवल कागज़ पर आदेश निकाल कर ढिंढोरा पीटते हैं। हमारी जान को हज़ारों जोखिम हैं। घर से बाहर निकलिये तो आवारा कुत्ते आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। काटे तो इन्जेक्शन लगवाइये, पीछे दौड़े और दुर्घटना हो जाये तो इलाज कराइये, मर भी जाइये। कुत्तों से बचिये तो आवारा और पालतू सभी प्रकार के पशु सड़क पर आपकी दुर्घटना का कारण हो सकते हैं। अजी क्या पूछिये सड़क के गहरे खड्डे और खुले मेन होल मुँह बाये आपको लीलने को खड़े हैं। घर के बाहर और भीतर बलात्कार आक्रमण आप में से किसी को भी बीमार कर सकते हैं। और हाँ याद आया बिजली के तार भी आप पर टूट कर गिर सकते हैं उनको 75 साल में ज़मीन में नहीं गाड़ा जा सका है। अच्छा सरकार चाहती है कि बीमार पड़ो तो बीमार भी पड़ जायेंगे और अब इलाज़ कराने जायेंगे पर भाई गाँव में डॉक्टर व अस्पताल ही नहीं हैं तो इलाज कैसे हो? जैसे–तैसे पहुँच भी गये सरकारी या निजी अस्पताल तो बीमारों को लम्बी कतार का, भटकने का और फिर मुफ्त इलाज़ का रहस्य भी समझने की आवश्यकता है। सरकारों के कई प्रोजेक्ट्स होते हैं। एक सड़क का उदाहरण लीजिये। सरकार अथवा कोई भी अन्य अभिकरण इस हेतु निविदा आमंत्रित करते हैं। सबसे सस्ती निविदा देने वाले को कार्य मिलता है। गुणात्मकता पूर्ण काम करने वाली कम्पनी पहले ही पीछे हट जाती है। सबसे सस्ती निविदा वाला ठेकेदार सस्ती व कम गुणात्मकता वाली वस्तुएँ काम में लेता है। कुछ राशि वह कर्मचारियों व अधिकारियों को प्रसन्न करने में व्यय करता है। परिणाम स्वरूप सड़कों का जो हाल होता है वह हम सब भोगते हैं। सरकार व मुफ्त इलाज़ करने वाले सस्ती व अप्रामाणिक दवाई व उपकरण खरीदेंगे ही और मरीज़ों पर वाँछित प्रभाव कम होगा अथवा नहीं होगा। स्वास्थ्य का नहीं इलाज़ का अधिकार दिया है और स्वास्थ्य के बजाय मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। सरकारी अमला कितना ही नाराज़ हो, यह सत्य है कि वहाँ जो अव्यवस्था है वही सर्वत्र मुफ्त इलाज़ में होगी।

सरकार ने तो शिक्षा का अधिकार भी दिया परंतु क्या शिक्षा का स्तर उन्नत हुआ। कारण स्पष्ट है भवन, उपकरण, शिक्षक व उनके शिक्षण के स्तर का अभाव और उसके साथ सर्वत्र भ्रष्टाचार के चलते अधिकार देना एक महज औपचारिकता है। सरकारों की नौटंकी और मजाक मात्र है। जनता का उपहास है। क्या हमे जीने का अधिकार ईश्वर प्रदत्त नहीं है। उसे देना क्या? हमारे जन्म सिद्ध अधिकार तो कई हैं परंतु क्या सरकार वह सब कुछ कर पाई है? ऐसा कौनसा जीवन क्षेत्र है जिसमें नागरिक सुख–सुविधा से रह पा रहा है? चारों ओर अनुशासनहीनता कानून व्यवस्था की धज़्जियाँ उड़ती दिखाई देती हैं। क्या राज्य सरकारों का महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, मिलावट आदि रोकने में कोई योगदान नहीं होना चाहिये? ट्राफिक की अव्यवस्था, चोरी, डकेती, बलात्कार, जमाखोरी, काला बाजारी, घोर पर्यावरण प्रदूषण, अतिक्रमण, सांप्रदायिक दंगे, प्रत्येक स्तर पर विधायिका, कार्यपालिका, न्याय पालिका व मीडिया की व्यवस्था सुधारने आदि में राज्य सरकारों का कोई कर्त्तव्य नहीं है। केवल कागज़ी आदेशों व कार्रवाई से हालात नहीं बदलते। जब सरकार अपनी नीतियों में नीयत साफ नहीं रखती तो अव्यवस्था बढ़ती है, घटती नहीं। राजस्थान के आगामी चुनावों के मद्देनज़र 'स्वास्थ्य का अधिकार' भी मात्र एक भद्दे मज़ाक से अधिक कुछ भी नहीं है और यह कटु सत्य आने वाला समय स्वतः ही जनता पर उजागर होगा। जो सरकारें 75 वर्ष में नागरिकों को रोटी, कपड़ा, मकान की मूल सुविधाएँ नहीं दे पाई वे 'स्वास्थ्य व शिक्षा के अधिकार' जैसे 'लोली पोप' पकड़ा कर जनता को मूर्ख बनाने का काम करती है। जनता को सरकारों के इस दुष्प्रचार को समझना होगा और यह दबाव बनाना होगा कि सरकार अपने पूरे तंत्र को पूरे 'सिस्टम' को सुधारने का प्रयास करे।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

बच्चों की सोच में झलकता वैज्ञानिक नज़रिया

राजेन्द्र मोहन शर्मा

बच्चों की अभिरुचि और उनकी समझ के अनुसार उन्हें क्या पढ़ना चाहिए इसको लेकर अभिभावकों सहित शिक्षक अपने अपने तरीके से उन की जरुरतों का समाधान करने की कोशिश करते हैं। मनोवैज्ञानिक भी इस दिशा में अनेक सुझाव देते हैं। लेकिन बाजार के दबाव और साहित्य के नाम पर संस्कार परोसने वालों ने बच्चों पर अपनी भावनाओं और कभी–कभी तो कुंठा को भी बच्चों के आगे परोसने में गुरेज नहीं किया है। क्या सचमुच बच्चे तोता–मैना की कहानी, राजा–रानी, चोर–सिपाही जैसे खेल और उनकी कहानियां और कविताएं सुनना पढ़ना पसंद करते हैं ? दरसल में बच्चों के साथ बैठकर बात करना उन्हें समझना और उनके मनोभावों को गहराई तक परखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

राजस्थान में पंडित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी का अभी छः माह पहले गठन हुआ और इस दिशा में अकादमी ने जब काम करना शुरू किया तो सबसे पहली चुनौती सामने यही थी कि क्या वही सब सामग्री संजोए और जुटाएं जो प्रचलित है, उपलब्ध या फिर कुछ नए सिरे से विमर्श करें। अनेक विद्वान साथियों के साथ विमर्श के बाद अकादमी ने निश्चय किया कि बच्चे क्या पढ़ना चाहते हैं इसका निर्णय सबसे पहले बच्चों के स्तर पर ही होना चाहिए। यहीं से रास्ता खुला सर्वे करने वाली अनेक एजेंसियों और विशेषज्ञों से बातचीत की इसी दौरान अकादमी के लोगों को विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों से भी मिलने का मौका मिला। इसी समूह में युवा विद्यार्थी यश झा और उनका समूह जो 'रुचि' नाम से अपनी एक संस्था चलाते हैं ने बात समझने के बाद अकादमी के सामने एक प्रजन्टेशन दिया और बताया कि हम किशोर किशोरियों के बीच जाकर एक सर्वेक्षण करके फाइन्डिग्स तलाश सकते हैं। अकादमी को यह प्रस्ताव पसन्द आया यद्यपि उन्हे संस्था की क्षमताओं के प्रति संशय था।

आशंका थी कि क्या यह युवा वर्ग अपेक्षाओं के अनुसार सर्वेक्षण में गंभीरतापूर्वक काम कर पाएगा। तथा यह युवा समूह उतनी समझ के साथ अपना काम कर पाएंगे। लेकिन जब यश झा ने अपनी रिपोर्ट पेश की तो वे हैरान रह गए 20–22 साल के शोधकर्ताओं ने लगभग 3 महीने के अथक परिश्रम के बाद राजस्थान के तकरीबन 27 जिलों में 5000 से अधिक स्कूल जाने वाले 11 से 15 साल के बालक बालिकाओं के साथ न केवल संपर्क किया बल्कि उन्हे सर्वेक्षण से जोड़ने का भी विशेष ढंग से काम किया।

उन्होंने अपनी रणनीति के तहत सबसे पहले उच्च क्षमता युक्त योग्य शिक्षकों से परामर्श किया और उनकी सहायता से उत्सुकता एवं उत्तेजक वातावरण ने उन बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाने और उनके भाषा कौशल पर मदद प्राप्त की। सर्वे कर्ताओं ने पाया कि उनके सहायक शिक्षक यह सुनिश्चित करते रहे कि बच्चों को जो चुनौती दी जाए और वे अच्छी तरह समझें और जानने के बाद सहभागी बनें। सर्वेक्षण कर्ताओं ने पाया कि अधिकांश बच्चे सामाजिक और भावनात्मक विकास के प्रति सचेत थे । पहले बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और सीखने की सामग्री और प्रौद्योगिकियों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया फिर छात्रों की सहभागिता को सुनिश्चित किया गया । इस प्रकार लगभग 300 विद्यार्थियों पर आफलाइन काम करने के बाद आगे का सम्पूर्ण सर्वेक्षण आनलाइन मोड में किया गया।

सर्वेक्षण कर्ताओं ने 11 से 15 के बच्चों के लिए जो प्रश्न तैयार किए हैं वे बहुत सीधे और सरल थे साथ ही उनकी संख्या भी सीमित रखी गई। सर्वेक्षण का पहला राहत भरा नतीजा यह है कि लगभग 89 प्रतिशत बच्चे किताबें पढ़ना पसंद करते हैं और वे यह जानते हैं कि उन्हें अपनी अभिरुचि की कौन सी किताब पढ़ना पसंद है। इस नतीजे से बाल साहित्य लेखकों का हौसला बढ़ेगा और युवा होते पाठकों के नजरिए को भी समझने का काम भी आसान होगा। इसी प्रश्न के अगले भाग में बच्चों ने उत्तर दिया है कि वे अपनी पसंद की पुस्तक लाइब्रेरी से जाकर चुन सकते हैं। यहीं पर एक बुनियादी सवाल खड़ा होता है हमारे शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों के लिए अपने पुस्तकालय कितने खोलते हैं, कितने पुस्तकालयों में स्तरीय पुस्तके हैं, कितनी किताबें बाल मन को लुभाने में सक्षम हैं । खास तौर पर स्कूल स्तर पर यह समस्या काफी गंभीर है और राजकीय विद्यालयों की तो इस पर बात करना ही बेकार है । मुझे अपने शैक्षिक प्रशासक के रूप में तीन दशक पहले की एक घटना का स्मरण हो रहा है मैं एक विद्यालय में निरीक्षण के लिए पहुंचा और आदत के मुताबिक संस्था प्रधान से जाते ही पूछा आपके यहां पुस्तकालय कहां है? संस्था प्रधान ने बड़े गर्व से कहा कि एक बड़े लोहे के बख्शे में सारी किताबें बंद हैं और ताला लगा है। मैंने उन्हे साथ लिया और कमरे को खुलवाया और बक्से पर जुड़े लोहे के ताले को हटवाया। किताबें बिल्कुल नई थी और संभवत खरीदने के बाद कभी भी पढ़ने के लिए नहीं दी गई थी। मैंने पूछा कि आप इन्हें खुले में क्यों नहीं रखते हैं ताकि बच्चे पसंद करके पढ़ने के लिए ले जा सकें। उन्होंने जवाब दिया कि पुस्तकों के चोरी होने का डर है। शैक्षिक प्रशासनिक अधिकारी होने के नाते मैंने संस्था प्रधान से कहा कि मैं आपको लिखित में यह आदेश देकर जा रहा हूं कि आप इन पुस्तकों को टेबल पर खुले में रखिए और बच्चों को पढ़ने के लिए मुक्त भाव से ले जाने दीजिए। यदि आपके यहां से पुस्तकें चोरी हो जाएं तो आप मुझे रिपोर्ट भेजेंगे। मैं आपका नाम पुरस्कार के लिए संप्रेषित करूंगा। वे हतप्रभ रह गए, मैंने कहा जिस स्कूल में बच्चे किताबें पढ़ने के लिए लालायित हों और उन्हें पढ़ने के लिए न मिले तो यकीनन वे पुस्तकें चोरी करके ले जाना पसंद करेंगे। आप विद्यालय का वातावरण ऐसा बनाइए जहां बच्चे स्वेच्छा से किताबें ले जाएं और समय पर लाकर जमा कर दें कुछ समय बाद वहां सुखद परिवर्तन देखने को मिला।

विज्ञान दृष्टि से सर्वेक्षण का एक नतीजा बहुत चौंकाने वाला निकला 81 प्रतिशत से अधिक बच्चे इंटरनेट, अंतरिक्ष और स्पेस जैसे विषयों के बारे में खोज और उनके संबंध में पढ़ ने के लिए रुचि रखते हैं । इससे निष्कर्ष में हमें यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि हमारे पास इन विषयों पर कितने समर्थ और सक्षम लेखक हैं तथा वे बाल मनोविज्ञान की भाषा के अनुरूप खोज परक लेकिन रुचिपूर्ण तरीके से बच्चों को पढ़ ने के लिए सामग्री दे सकें ।

इसी प्रश्न के दूसरे भाग में 70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को विज्ञान संबंधी शोध और प्रयोग करना पसंद है। 56 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी विज्ञान संबंधी वीडियो देखते हैं और 37 प्रतिशत विद्यार्थी वास्तविक जीवन की चीजों को देखकर मॉडल बनाते हैं । 18 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि वह विज्ञान संबंधी आलेख भी पढ़ते हैं। अब आप ही बताइए देश की होनहार पीढ़ी मजबूती से विज्ञान की सीढी पर खड़ी होना चाहती है लेकिन हम उन्हें क्या कुछ दे पा रहे हैं। अधिकांश पुस्तकालयों में आज भी जिन किताबों की सप्लाई हो रही है वे पौराणिक रूढ़ि वादी और तथाकथित ऐतिहासिक तथ्यों की ऐसी मनगढ़ंत कहानियां हैं जिनका कोई सिर पैर नहीं है।

ऐसा नहीं है कि विज्ञान की दिलचस्पी के कारण छात्रों में कथा और कथेतर साहित्य संबंधी पुस्तकों को पढ़ ने की दिलचस्पी समाप्त हो गई है। 48 प्रतिशत से अधिक इस आयु वर्ग के बच्चों ने कथा साहित्य में अपनी रुचि प्रस्तुत की है 14 प्रतिशत से अधिक बच्चे कथेतरतर और 26 दोनों तरह के साहित्य को पढ़ ना चाहते हैं ।

लेकिन एक मजेदार बात अधिकांश विद्यार्थियों ने आधुनिक हास्य प्रधान कार्यक्रमों से जुड़ाव के तौर पर व्यक्त की है वह है कि वह कॉमेडी शैली में पढ़ना। साइंस फिक्शन शैली में पढ़ने वालों की मांग भी कम नहीं है 63 प्रतिशत विद्यार्थी इस रूप में विज्ञान पढ़ना चाहते हैं। इसके साथ ही वे आध्यात्मिक, रहस्य, हॉरर थ्रिलर, एनिमेशन आदि चीजों को भी पढ़ने में रुचि रखते हैं।

81 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को खेल के मैदान में खेलना पसंद है जो इस तथ्य को झुठलाता है कि इस उम्र के बच्चे अपना अधिकांश समय खेल मैदान के स्थान पर लैपटॉप या मोबाइल में गुजारना चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि शहरों में खेल के मैदान नदारद हो गए हैं और जो कुछ बचे हैं वे अतिक्रमण के शिकार हो चुके हैं। सड़क पर खेलना बच्चों की मजबूरी है यह अच्छी तरह समझ आ रहा है। 63 प्रतिशत विद्यार्थियों ने पर्यावरण में हो रहे नकारात्मक परिवर्तन की गतिविधियों को न केवल पहचाना है बल्कि कहा है कि यह मानव जनित दुष्परिणाम है । आप सोच सकते हैं कि इतनी छोटी उम्र के बच्चे भी इतनी बड़े बड़े बड़ी–बड़ी समस्याओं पर कितनी गंभीरता से अपनी पैनी निगाह टिकाए हुए हैं। लगभग 60 प्रतिशत बच्चों को लगता है कि मनुष्य पानी का दुरुपयोग कर रहा है। एक मजेदार बात बच्चों ने अभिव्यक्त कि वह है ऑफलाइन क्लासेज के प्रति रुचि। कोरोना काल में जो बच्चे घरों में कैद होकर रह गए थे और उनका 2 वर्ष से अधिक का समय जिस तरह गुजरा था यह सर्वेक्षण का नतीजा उनके मन के पीड़ा को व्यक्त करता है। लगभग 80 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि वे केवल और केवल ऑफलाइन क्लास में ही पढ़ना चाहते हैं। सर्वेक्षण में संस्कृति और पर्यटन स्थल आदि के विषय में भी बच्चों के सकारात्मक विचार सामने आए है। सर्वेक्षण के दौरान अनेक बच्चों ने सर्वेक्षण कर्ताओं को सुंदर रचनात्मक चित्र बनाकर दिए जो उनकी सुंदर अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं ।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद् व चिन्तक

बूंदी में अंबेडकर सर्किल पर गंदगी के ढेर और अतिक्रमण, प्रशासन मौन

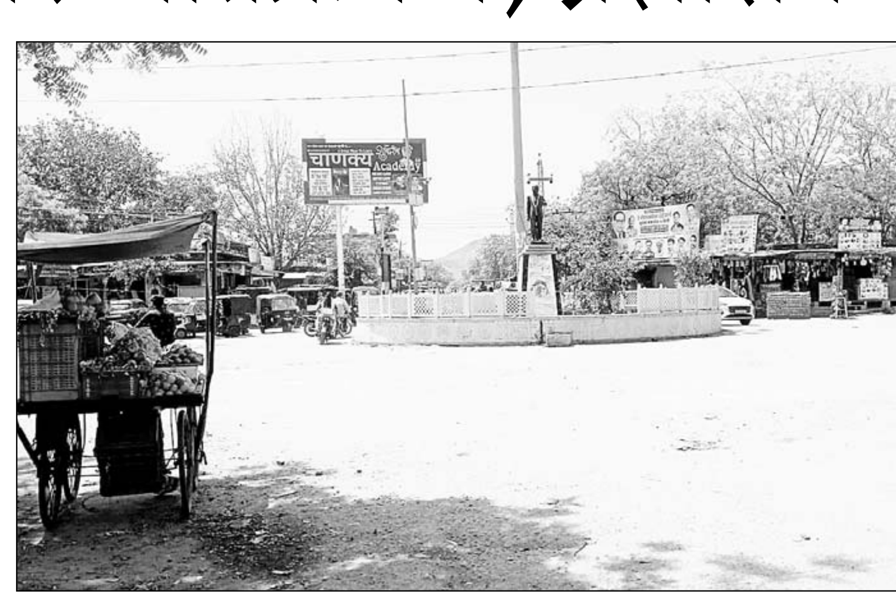

बुंदी के लंका गेट के बाहर स्थित अंबेडकर सर्किल के आसपास अतिक्रमणों की भरमार है।

- **प्रशासनिक बेरूखी के चलते अंबेडकर सर्किल की हालत बदतर हो रही है**
- **देखरेख के अभाव में रैंलिंग टूटी हुई हैं, प्रतिमा का कलर उड़ चुका है**
- **लंका गेट के बाहर स्थित अंबेडकर सर्किल अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है**

बूंदी, (निसं)। 14 अप्रैल पूरे भारत में संविधान के निर्माता बाबा साहब अंबेडकर के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पूरे देश में जगह–जगह पर बाबा साहेब की स्मृतियों में प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं और अनुयायियों द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित कर बाबा साहब के विचारों को आत्मसात करने के संदेश दिए जाते हैं। लेकिन उन संदेशों और शिक्षाओं पर अमल करने की बात औपचारिकता मात्र होती है। बाबा साहेब की जन्म जयंती पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम मात्र औपचारिकता नहीं होती तो लंका गेट के बाहर स्थित अंबेडकर सर्किल अपनी बदहाली पर आंसू नहीं बहा रहा होता। एक तरफ चौराहे के मध्य सर्किल में बाबा साहेब की आदमकद प्रतिमा मौजूद है, वहीं चौराहे के चारों तरफ स्थाई और अस्थाई अतिक्रमण सहित गंदगी के ढेर लगे हुए है।

प्रतिमा पर बने सर्किल की टूटी हुई रैंलिंग और रैंलिंग पर सूखें हुए कपड़े इसकी दुर्दशा को बयान करते है। सर्किल से लंकागेट की तरफ वाले रोड़ के दोनों तरफ 30 फीट से भी ज्यादा अतिक्रमण कर दुकानदारों ने अपना सामान फैला कर रखा है।

वहीं पुरानी धानमंडी की ओर स्थित नालें की स्थिती नगर परिषद् के सफाई दस्तें की बेरूखी को बयान करती है। वहीं क्षेत्रवासी दुकानदारों का कहना हैं कि चौराहे पर हो रहे अतिक्रमणों के चलते पक्की दुकाने दबी हुई नजर आती हैं। सिलोर रोड़ की तरफ कहीं बार जाम जैसे हालात बन जाते हैं। यहां यातायातकर्मियों की कमी भी और अतिक्रमण हादसों का कारण बने रहते है।

कायाकल्प के नाम पर मिले कोरे आश्वासन : इस सर्किल पर वर्ष में तीन बार अंबेडकर जयंति, परिनिर्वाण दिवस और संविधान दिवस पर प्रशासनिक और सामाजिकसंस्थाओं द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन कर बाबा साहब को श्रद्धांजलि दी जाती हैं, और कायाकल्प के बड़े बडे आश्वासन दिए जाते हैं, लेकिन वे सब समय निकलने के हवाई हो जाते हैं।

डॉ.भीमराव अंबेडकर कल्याण समिति के जिलाध्यक्ष बाबू लाल वर्मा का कहना है कि चौराहे के सौंदर्यीकरण और अतिक्रमणों को हटाने के लिए कई बार नगर परिषद सभापति आयुक्त और जिला प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत करवाया गया हैं, लेकिन कार्यवाही और कायाकल्प के नाम पर कोरे आश्वासन के अलावा अब तक कुछ नहीं हुआ है।

जिलाध्यक्ष बाबू लाल वर्मा ने कहा कि अंबेडकर सर्किल की दुर्दशा को देख कर इसके कायाकल्प के लिए समिति इस चौराहे को गोद लेने को तैयार हैं। इसके लिए कई मर्तबा नगर परिषद् के लिखित दे चुके हैं, लेकिन गोद देने में नगर परिषद न कोई रूचि दिखा रहा हैं और नहीं इसके सौंदर्यीकरण में। कार्याकल्प के स्थान पर लगातार बढ़ते अतिक्रमण और गंदगी के ढेर चौराहे की बदहाली को बढ़ा रहे है। 2022 में आयोजित अंबेडकर जयन्ति के कार्यक्रम में मौजूद सभापति मधु नुवाल और पूर्व मंत्री हरिमोहन शर्मा ने 1 वर्ष में अंबेडकर सर्किल के कार्याकल्प की बात कहा थी, लेकिन वर्षपर्यन्त कोई कार्य यहां नहीं हुआ है।

एडवोकेट उमेश आर्य ने बताया कि डॉ. अंबेडकर शैक्षिक जागृति एवं अधिकार समिति और डॉ. अंबेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी द्वारा पिछले दिनों 20 मार्च को जिला कलक्टर को ज्ञापन सौंप कर सर्किल की दुर्दशा को सुधारने सहित स्टील की रैंलिंग लगवाने और सीढ़ियों के निर्माण की मांग की है। ऐसा ही ज्ञापन 2022 में भी जिला कलक्टर को सौंपा गया था, लेकिन प्रशासनिक बेरूखी के चलते अंबेडकर सर्किल की हालत बदतर हो रही हैं। उमेश आर्य कहते हैं कि यह सर्किल शहर का दूसरा बडा सर्किल हैं, जिसका योजनाबद्ध रूप से सौंदर्यीकरण करवा कर दशा सुधारी जा सकती है। लेकिन किसी का कोई ध्यान इस ओर नहीं है।

उक्त मामले में नगर परिषद सभापति मधु नुवाल और आयुक्त महावीर सिसोदिया से पक्ष जाने के लिए कई बार संपर्क करने की कोशिश की गई। लेकिन हर बार प्रयास विफल रहा। इन दोनों जिम्मेदार पदाधिकारियों के कॉल नहीं उठाने से इनका पक्ष नही मिल पाया।

बाबू लाल वर्मा, जिला अध्यक्ष, अंबेडकर कल्याण समिति ने बताया कि अंबेडकर सर्किल पर लगे गंदगी के ढ़ेर और अतिक्रमण के चलते प्रतिमा की छवि धुमिल हो रही है। देखरेख के अभव में रैंलिंग टूटी हुई हैं, प्रतिमा का कलर उड़ चुका है। कायाकल्प के नाम पर केवल कोरे आश्वासन ही मिल रहे है।

उमेश आर्य, महासचिव, डॉ. अंबेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी ने बताया कि अंबेउकर सर्किल पर सौंदर्यीकरण होना चाहिए। कायाकल्प के नाम पर जयंति के एक दिन पूर्व साफ सफाई करवा कर मात्र खानापूर्ति करता है। प्रतिमा पर माल्यार्पण के लिए भी जुगाड़ करना होता हैं, ऐसे में यहां स्थाई तौर पर सीढी का निर्माण भी होना चाहिए और सर्किल की बदहाली के कारण अतिक्रमणों पर नकेल कसनी चाहिए।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 13 अप्रैल, 2023

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 10:43 तक, शिव योग दिन 12:32 तक, बालव करण दिन 2:41 तक, चन्द्रमा सांय 4:22 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मीन, चन्द्रमा–धनु, मंगल–मिथुन, बुध–मेष, गुरू–मीन, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज कालाष्टमी है। स्थिर योग 10:43 से सूर्योदय तक है। आज बूढ़ा बास्योढ़ा (शीतलाष्टमी), शहादते–ए–हजरत अली है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:44 तक, चर 10:53 से 12:28 तक, लाभ–अमृत 12:28 से 3:38 तक, शुभ 5:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:46

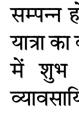

मेष

परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

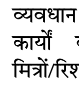

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है।

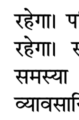

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

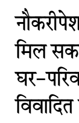

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

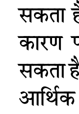

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

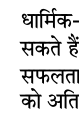

कन्या

घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

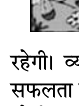

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

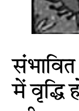

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

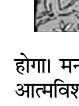

धनु

पिछले कुछ समय से चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

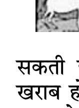

मकर

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं।

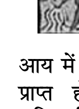

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

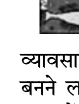

मीन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।